Nature Education & Eco-Anubhuti Camps at Kanha

Located in the "Maikal" ranges of the Satpuras, and falling in the Mandla and Balaghat districts of Madhya Pradesh, Kanha Tiger Reserve is internationally renowned for its typical central Indian floral and faunal attributes. Apart from supporting a viable population of the tiger, the tiger reserve has also distinguished itself in saving the highly endangered hard ground barasingha from extinction, and has the unique distinction of harbouring the last world population of this deer species.

The tiger reserve supports amazing woodlands of sal and miscellaneous species along with grassy expanses of varied sizes. This vast vegetation harbours a number of habitat types that support thousands of ungulates of at least 10 major species. This prey base forms the mainstay of food for tigers and several co-predator species. The nature reserve is full of life events and natural processes maintaining this unique wildlife ecosystem.

The Kanha management feels that education and awareness amongst the students living in the tiger reserve, is of utmost importance. Therefore, one of the most important goals of wildlife management in the tiger reserve is also to spread awareness about wildlife conservation in public, and also to educate the students of various middle and higher secondary schools located in the buffer zone of the tiger reserve. Besides, specially abled (visually impaired, hearing impaired) students also need to be introduced to the protected area via school and park visits both. The initiation is by means of sounds, touch and sign language in case of hearing-impaired students both through specialized teachers.

The state government's resolve to popularize tourism in Madhya Pradesh, and also the above goal has led to the concept of Nature Education and Eco-Anubhuticamps. This has been launched by the Madhya Pradesh Eco-Tourism Development Board, Bhopal. Besides, the Last Wilderness Foundation, a prestigious NGO is also contributing very significantly to this programme.

These camps focus on imparting nature education to the students that will in turn help in securing the future of our forests. This is also a tool to provide correct and factual information about the forests and wildlife along with solutions and guidelines to the people living in the buffer/core areas of the reserve thus helping in reducing the impact of humans on wildlife.

Furthermore, a child born and bought up in rural area like buffer villages of Kanha is unaware of the urban environmental issues like pollution of air, water and sound, water logging, waste pollution, e-pollution and so on. And hence it becomes more crucial for a rural student to be made aware of current environmental issues and educate them about wildlife conservation along with making them understand their dependency on the forests for food, fuel, fodder and overall livelihood. Thus educating the rural students living in buffer areas and their role in conservation of protected areas is much more important.

The duration of each nature education camp at Kanha is two full days and one night. Besides, the duration of each eco-anubhuti camp is one full day. The students are put up at Khatia/ Mukki for this programme. The programme is initiated by the team by undertaking school visits situated in the buffer zone of the reserve, wherein they interact with the students about the biodiversity that exists in the forest and conservation of the same. Following the interaction, the students are then given a specific conservation issue to write about, in an essay form. The selected students (chosen by the school) are then taken for a park visit via a safari, to help them learn about forests, help appreciate the bio- diversity that exists in our forests and understand the interconnectedness of all the denizens. The safari is followed by a de-briefing session, reiterating the conservation value of our wilderness spaces with the help of a presentation and movie.

The students are also taken on a nature trail wherein they are made familiar with the forest ecosystem and finally games with an environment message are initiated with the students so that the message of forest protection is clear in their minds as they depart.

From 2016 to the 15th January, 2020 a total of 15699 students have participated in 202 camps in the tiger reserve. The target of remaining 660students in 11 camps is expected to achieved by the next month.

राज्य स्तरीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स मध्यप्रदेश भोपाल

बाघ मित्र अवॉर्ड से सम्मानित

मध्यप्रदेश शासन वन विभाग के अतंर्गत गठित स्पेशल टास्क फोर्स वन्यप्राणी राज्य स्तरीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स भोपाल मध्यप्रदेश का World Wide Fund India संस्था के ई-मेल दिनांक 13.12.2019 के प्राप्त जानकारी अनुसार, WWF-PATA Bagh Mitra Award 2018 हेतु चयनित किया गया है।

यह अवॉर्ड 19 दिसम्बर 2019 नई दिल्ली में स्पेशल सेक्रेटरी पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन भारत सरकार के हस्ते दिया गया है।

7वां अंतर्राष्ट्रीय वन मेला

18 से 22 दिसम्बर 2019, लाल परेड मैदान, भोपाल

मध्यप्रदेश शासन वन विभाग एवं मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ, मर्यादित द्वारा वन मेले का आयोजन वर्ष 2001 से प्रदेश स्तरीय मेले के रूप में आरंभ हुआ। वन मेले के आयोजन का प्रदेश से राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय से अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक का विस्तार लघु वनोपजों के वैभव एवं सम्पन्नता, ग्रामीण आजीविका एवं निर्भरता को प्रदर्शित करता है। वर्ष 2011 से मेले का स्वरूप अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक विस्तारित हुआ।

सहकारिता मंत्री डॉ. गोविंद सिंह, अल्पसंख्यक एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण मंत्री श्री आरिफ अकील और जनसम्पर्क मंत्री श्री पी.सी. शर्मा ने अंतर्राष्ट्रीय वन मेले का शुभारंभ किया।

7वें अंतर्राष्ट्रीय वन मेले का आयोजन 18 से 22 दिसम्बर 2019 की अवधि में किया गया। इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय वन मेला-2019 (International Herbal Fair-2019) की विषयवस्तु ''अकाष्ठीय वनोपज : अवसर एवं चुनौतियां'' "NTFPs : Opportunities& Challenges" गई।

अंतर्राष्ट्रीय वन मेले का उद्घाटन समारोह डॉ. गोविन्द सिंह, माननीय मंत्री, सहकारिता, संसदीय कार्य एवं सामान्य प्रशासन विभाग के मुख्य अतिथ्य तथा श्री आरिफ अकील माननीय मंत्री, भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक

कल्याण, सूक्ष्म लघु और मध्यम उद्यम विभाग, श्री पी.सी. शर्मा, माननीय मंत्री, विधि एवं विधायी कार्य, जनसम्पर्क, विज्ञान एवं प्रौद्यागिकी, विमानन, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व, म.प्र. शासन, श्री वीरेन्द्र गिरी गोस्वामी अध्यक्ष, म.प्र. राज्य लघु वनोपज संघ के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

श्री ए.पी. श्रीवास्तव, अपर मुख्य सचिव, म.प्र. शासन, वन विभाग, डॉ. यू. प्रकाशम, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, म.प्र. शासन, वन विभाग, लघु वनोपज संघ के संचालक मंडल के माननीय सदस्यगण, मंचासीन जन-प्रतिनिधि गण, अधिकारीगण भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

वन मेले का आयोजन देश में इस प्रकार का एक विरला एवं अनूठा आयोजन है। वन मेला एक ऐसे मंच का माध्यम है जहां लघु वनोपजों के संग्राहक, प्रसंस्करणकर्ता, विनिर्माणकर्ता, अनुसंधानकर्ता, दर्शनवेत्ता, हर्बल निर्माता व उत्पादक, देश एवं प्रदेश की समृद्ध जैव विविधता, संस्कृति एवं औषधियों के परम्परागत ज्ञान को आत्मसात करते हैं। वन हमेशा से ही परम्परागत आर्थिक प्राप्तियों एवं स्वास्थ्य आजीविका सुरक्षा के स्रोत रहे हैं साथ ही वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में वनों का एक विशिष्ट योगदान है।

वनों से खाद्य उत्पाद, परम्परागत औषधियां तथा आजीविका प्राप्ति के लिए वनीय संसाधनों का समुचित एवं संवहनीय उपयोग सुनिश्चित करना वर्तमान में महत्वपूर्ण आवश्यकता एवं समय की महत्वपूर्ण मांग है। विश्वस्तर पर वृद्धि की ओर अग्रसर आयुर्वेद की लोकप्रियता का प्राचीनतम आधार हमारे वनों में पायी जाने वाली औषधीय जड़ी-बूटियां ही हैं। हमारे राष्ट्र ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जगत की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति होने के नाते आज हर्बल उत्पादों का बोलबाला है। विश्व में भारतीय चिकित्सा पद्धति, योग एवं आयुर्वेद का महत्व बढ़ा है जिससे हर्बल उत्पादों की बढ़ती हुई लोकप्रियता से विश्वस्तरीय मांग में निरंतर वृद्धि हो रही है। लघु वनोपज आधारित आजीविका क्षेत्र के विस्तार एवं संभावनाओं को तलाशकर लाभार्थी अंशधारकों को एक दूसरे से जोड़ने का कार्य इस आयोजन के दौरान प्रमुखता से किया गया। मेले के दौरान कार्यशाला/संगोष्ठी, नि:शुल्क, चिकित्सीय परामर्श एवं विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से लघु वनोपजों से संबंधित क्रिया-कलापों एवं गतिविधियों के क्षेत्र में कार्यरत विषय विशेषज्ञों को बौद्धिक मंच उपलब्ध कराकर प्रोत्साहित किया गया।

वन मेले के माध्यम से वनवासियों को एक ओर जहां उनके द्वारा संग्रहित कच्चे माल तथा वनौषधियों हेतु बाजार उपलब्ध हुआ वहीं उनमें ग्रामीण स्तर पर

स्वावलम्बी होकर अपने लघु उद्योग स्थापित करने की भी संभावनायें तलाशी गईं। साथ ही शहरी क्षेत्रों के निवासियों को उचित कीमत पर शुद्ध उत्पाद उपलब्ध कराए गए। लघु वनोपज संघ के इन प्रयासों से प्रदेश की अनेकों प्राथमिक संस्थाओं द्वारा तैयार वनौषधियां एवं अन्य हर्बल उत्पाद, प्रदेश तथा प्रदेश के बाहर अपनी पहचान बना सकने में सफल हुए।

मेले के प्रमुख आकर्षण

मेला अवधि में लगभग एक लाख लोगों ने मेले का भ्रमण किया तथा प्रतिदिन लगभग 20000 लोगों ने मेले का आनन्द उठाया।

इस वर्ष मेले में विक्रय हेतु 275 स्टाल स्थापित किये गये, जिसमें उत्तरप्रदेश, कर्नाटक, छत्तीसगढ़, दिल्ली, उड़ीसा, महाराष्ट्र राज्यों का प्रतिनिधित्व रहा। हर्बल उत्पादों विशेषकर कच्चे माल से लेकर प्रसंस्कृत उत्पादों एवं इससे संबंधित तकनीक का जीवंत प्रदर्शन एवं विभिन्न शासकीय विभागों की योजनाओं इत्यादि से संबंधित जानकारियों का प्रदर्शन किया गया। मेले में चिकित्सा परामर्श हेतु ओपीडी के 23 स्टाल स्थापित किये गये, जिसमें लगभग 350 आयुर्वेदिक डॉक्टरों/वैद्यों द्वारा नि:शुल्क चिकित्सीय परामर्श प्रदान किया गया, लगभग 5000 लोगों ने नि:शुल्क चिकित्सीय परामर्श का लाभ लिया। मेले की कुल बिक्री लगभग 50 लाख रुपये रही।

"Responsible Management of Non-Timber Forest Produce : Access and Benefit-sharing"थीम पर आधारित मेले में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में भूटान, नेपाल के विशेषज्ञों के साथ-साथ मध्यप्रदेश एवं अन्य राज्यों के विषय विशेषज्ञों ने अपने विचार रखे तथा लघु वनोपजों के प्रबंधन एवं संरक्षण के संबंध में विस्तृत चर्चा हुई। लघु वनोपजों के संवहनीय विदोहन के लिये संग्रहणकर्ता, स्थानीय पारम्परिक पद्धति से उपचारकर्ता एवं वैद्यों, जैव विविधता बोर्ड के अधिकारियों के साथ एक सार्थक संवाद भी स्थापित किया गया।

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी लघु वनोपजों के क्रय विक्रय हेतु क्रेता-विक्रेता सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें 62 प्रकार की प्रजातियों के 03 करोड़ रुपये के 18 MoU निष्पादित किये गये।

मेले में प्रत्येक दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा स्कूल के बच्चों के लिये विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। स्कूल के बच्चों ने नृत्य प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता, गायन प्रतियोगिता, फैंसी

ड्रेस, नुक्कड़ नाटक, नुक्कड़ डांस प्रतियोगिता में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में कवि सम्मेलन, गजल, सूफी गायन, लाफ्टर-शो आकर्षण के केन्द्र रहे। झाबुआ एवं डिण्डौरी जिले के आदिवासी लोक नृत्य एवं मालवी लोक गीत का भी आयोजन किया गया।

समापन समारोह का आयोजन श्री लाल जी टंडन, माननीय राज्यपाल मध्यप्रदेश के मुख्य आतिथ्य, श्री उमंग सिंघार, माननीय मंत्री, वन, म.प्र. शासन की अध्यक्षता में एवं श्री वीरेन्द्र गिरी गोस्वामी अध्यक्ष, म.प्र. राज्य लघु वनोपज संघ के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। समापन समारोह में श्री ए.पी. श्रीवास्तव, अपर मुख्य सचिव, म.प्र. शासन, वन विभाग, डॉ. यू. प्रकाशम, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, म.प्र. शासन, वन विभाग, श्री एस.के. मंडल, प्रबंध संचालक, म.प्र. राज्य लघु वनोपज संघ, लघु वनोपज संघ के संचालक मंडल के माननीय सदस्यगण, जन-प्रतिनिधि गण एवं अधिकारी गण भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

••••••

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में अनुभूति कार्यक्रम का आयोजन

मध्यप्रदेश शासन वन विभाग द्वारा अनुभूति कार्यक्रम के अंतर्गत वन, वन्यप्राणी एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण सह जागरूकता शिविर इस वर्ष भी आयोजित किये जा रहे हैं।

अनुभूति कार्यक्रम के अंतर्गत वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में प्रथम शिविर दिनांक 19.12.2019 को आयोजित किया गया, जिसमें शासकीय कमला नेहरू उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टी.टी. नगर, शासकीय माध्यमिक शाला सूरज नगर एवं शासकीय नवीन कन्या हायर सेकेण्ड्री स्कूल नेहरू नगर के कुल 105 छात्र/छात्राओं ने भाग लिया।

अनुभूति कार्यक्रम के मास्टर ट्रेनर के रूप में श्री एन.एस. डुंगरियाल, सेवा निवृत्त अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, श्री एस.एस. राजपूत, मुख्य कार्यपालन अधिकारी म.प्र. ईको पर्यटन विकास बोर्ड, श्री ए.के. खरे, सेवा निवृत उप वन संरक्षक, डॉ. एस.आर. वाघमारे, सेवा निवृत उप वन संरक्षक, पक्षीविद के रूप में मो. खालिक उपस्थित रहे।

शिविर में सम्मिलित हुये प्रत्येक बच्चे को अनुभूति बैग, केप, पठनीय सामग्री, मुन्ना की कहानी, स्टीकर/पोस्टर, की-रिंग, बैच प्रदान किये गये। साथ ही विद्यार्थियों को पक्षी दर्शन, वन्यप्राणी दर्शन, प्रकृति पथ भ्रमण, स्थल पर विद्यमान वानिकी गतिविधियों की जानकारी, वन, वन्यप्राणी व पर्यावरण से संबंधित रोचक गतिविधियाँ कराई गईं एवं उनकी जिज्ञासाओं को जानकारी प्रदान कर शांत किया गया।

विद्यार्थियों को वन्यप्राणियों को कैसे रेस्क्यू किया जाता है इसके सम्बंध में वन विहार में उपलब्ध रेस्क्यू वाहन के माध्यम से रेस्क्सू टीम द्वारा अवगत कराया गया। कार्यक्रम के अंत में संचालक वन विहार श्रीमती कमलिका मोहंता द्वारा शिविर में सम्मिलित बच्चों को शपथ दिलाई गई एवं पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र वितरण किये गये।

Laxmi Maravi of Kanha Awarded with the Sanctuary Wildlife Award - 2019

Ms. Laxmi Maravi is a forest guard posted to Kanha Tiger Reserve who has recently been awarded with Green Teacher Award under the Sanctuary Wildlife Awards, 2019, with a citation and cash prize of Rs. 50,000. Presently, she is a member of the anti-poaching squad of the Kanha Tiger Reserve.

A native of small village, Ajhwaar in the Dindori district, she was the first woman from this village to join the forest department. She is a graduate, and joined Kanha in June, 2005. Dedicated, sincere and hardworking, Laxmi has excelled in her duties of patrolling the tiger reserve, discharging fieldwork duties and collecting data for Tiger Conservation Plan.

She has had several terrifying encounters with wild animals in the tiger reserve, including an incident where she defended herself against a wild boar with an umbrella! Laxmi's courage and honesty, and dedication led her to be chosen for Kanha's Nature Education Program, where she conducts an outreach programme for school children.

She is in charge of arranging educational tours at Kanha's buffer zone. Alongside, Laxmi also empowers the women from the Baiga tribal community to earn by handcrafting traditional jewelry. During such a small career span, Laxmi has earned many appreciations and accolades for his extremely positive attitude towards conservation duties at Kanha.

वृक्षारोपण निगरानी प्रणाली (वन विभाग द्वारा रोपित पौधों का अनुश्रवण एवं मूल्यांकन)

निगरानी एवं मूल्यांकन शाखा प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, मध्यप्रदेश के अधीन कार्य करती है। मध्यप्रदेश वन विभाग द्वारा राज्य में किये गए वृक्षारोपण कार्यों के प्रभावी अनुश्रवण करने हेतु विभाग की सूचना एवं प्रौद्योगिकी शाखा द्वारा वृक्षारोपण निगरानी प्रणाली का विकास किया गया है। वर्तमान में शाखा-निगरानी एवं मूल्यांकन द्वारा वृक्षारोपण निगरानी प्रणाली के माध्यम से संपूर्ण राज्य में मध्यप्रदेश वन विभाग द्वारा किये गये वृक्षारोपण कार्यों का अनुश्रवण एवं मूल्यांकन मुख्यालय स्तर से किया जा रहा है।

वृक्षारोपण निगरानी प्रणाली की मुख्य विशेषताएं :

1. यूज़र फ्रेंडली डैशबोर्ड जो कि विभिन्न मापदंडों की स्थिति को दर्शाता है, जैसे : वनमंडल स्तर से अनुमोदन, प्रतिवर्ष माह मई एवं अक्टूबर सत्र के मूल्यांकन एवं जीओमैपिंग आदि की स्थिति ।
2. वृक्षारोपण कार्यों के वनमडल स्तर से अनुमोदन, मूल्यांकन, व्यय एवं जीओमैपिंग आदि की विस्तृत रिपोर्ट।
3. मुख्यालय स्तर से बेहतर अनुश्रवण हेतु एकीकृत जीओ-पोर्टल, जिसके माध्यम से वृक्षारोपण क्षेत्र की सीमा के अतिरिक्त Satelite Imagery को देख सकते हैं।
4. चार स्तरों अर्थात् मुख्यालय, वन वृत्त, वनमंडल एवं परिक्षेत्र में अधिकारों का प्रतिनिधान के साथ ही मुख्यालय स्तर पर एकीकृत डाटा सेंटर।
5. कार्यप्रवाह आधारित पारदर्शी प्रणाली।
6. प्रणाली Public Domain में है एवं आमजन द्वारा इसका अवलोकन किया जा सकता है।

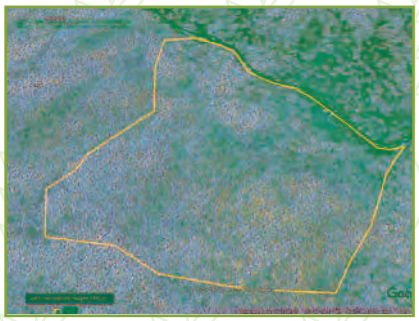

18-11-2013 (Imagery date)

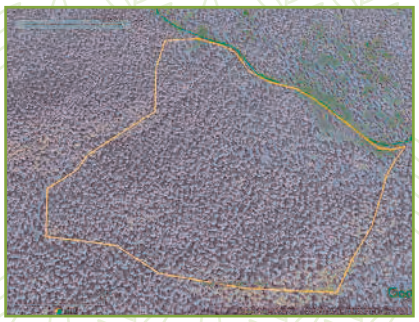

16-11-2018 (Imagery date)

शाखा के मुख्य कार्य :

1. प्रणाली में जानकारी को अद्यतन रखने हेतु समस्त जानकारियां नियमित रूप से प्रविष्ट करने के लिए मुख्य वन संरक्षकों एवं वनमंडल अधिकारियों को बारंबार उनके क्षेत्र की स्थिति से अवगत कराना।
2. प्रणाली से संबंधित समस्याओं एवं सुझावों जैसे: नवीन रिपोर्ट को जोड़ना, Technical Checks लगाना, वृक्षारोपण पंजीकरण को निरस्त करना आदि के निराकरण हेतु नियमित रूप से सूचना एवं प्रौद्योगिकी शाखा से समन्वय स्थापित रखना।
3. वीडियो कांफ्रेंस एवं क्षेत्रीय कार्यशालाओं के माध्यम से वृक्षारोपण प्रबंधन को प्रभावी बनाने हेतु प्रयास।
4. वृक्षारोपण कार्यों के अनुश्रवण एवं मूल्यांकन द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर विभाग को नीतिगत स्तर पर महत्वपूर्ण इनपुट प्रदान करना।